CHAPTER 12, हँसी की चोट, सपना, दरबार
PAGE 134, अभ्यास

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. 'हँसी की चोट' सवैये में कवि ने किन पंच तत्वों का वर्णन किया है तथा वियोग में वे किस प्रकार विदा होते हैं?

उत्तर- कवि ने ‘हंसी की चोट’ सवैये में जिन पांच तत्वों का वर्णन किया है उसमे - आकाश, अग्नि, वायु, भूमि और जल शामिल है। तथा वियोग में वे तत्व किस प्रकार विदा होते हैं उसका वर्णन इस प्रकार है जिस समय गोपी तेज़ तेज़ सांसे ले रही है और छोड़ रही है उसके कारण वायु तत्व चला जाता है। उसके ज्यादा रोने के कारण जल तत्व आँसू के रूप में चला जाता है। और शरीर में जब गर्मी उत्पन होती है तो पसीने के प्रवाह के कारण अग्नि तत्व खो जाता है। और किसी का वियोग

कर के खुद को कमजोर करने के कारण भूमि तत्व चला जाता है।

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. नायिका सपने में क्यों प्रसन्न थी और वह सपना कैसे टूट गया?

उत्तर- नायिका जब गहरी नींद में सो रही होती है तब वो बहुत ही प्यारा सपना देखती है वह देखती है की सपने में कृष्ण उसके पास आते हैं और उसे झूला झूलने के लिए आमंत्रित करते हैं। वह यह सोच के बहुत खुश होती है की सपने में ही सही उसे कृष्ण का साथ तो मिला। सपने में वह कृष्ण के साथ ख़ुशी-ख़ुशी चलती है । तभी ख़ुशी के मारे नींद से उचक कर वह जाग जाती है, और उसका वो हसीन सपना टूट जाता है और वो कृष्ण से जुदा हो जाती है ।

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. 'सपना' कवित्त का भाव-सौंदर्य लिखिए।

उत्तर- 'सपना' कवित्त के भाव-सौंदर्य में संयोग अवस्था का वियोग में बदल जाना है । यह वियोग में मिलन का परिवर्तन है जो इसकी सुंदरता को बढ़ाता है। ऐसा दुर्लभ संगम बहुत कम देखने को मिलता है। सपने में नायिका कृष्ण को अपने साथ देखती है। जैसे ही वह इस मिलन को और आगे ले जाना चाहती हैं, और नींद में ही अपने मन को राहत महसूस करा रही हैं। नायिका का सपना टूट जाता है । सपने के टूटने के साथ, ही वो कृष्णा से जुदा हो जाती है । ,कृष्ण का साथ छूट जाता है । वह अपनी नींद टूट जाने से अत्यंत दुखी हो जाती है।

कवी ने अपने शिल्प सौंदर्य की अद्भुत क्षमता दिखाते हुए अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

के प्रयोग 'सपना' कविता में किया है । इसने कवित्त के भाव सौंदर्य को निखारने में सोने पर सुहागा जैसा काम किया है ।

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. 'दरबार' सवैये में किस प्रकार के वातावरण का वर्णन किया गया है?

उत्तर- 'दरबार' सवैया पढ़ने से पता चलता है कि यह दरबार के बारे में कहा जाता है। उस समय दरबार में कला की कमी थी। भोग और विलास दरबार की पहचान बन रहे थे। दरबार में कर्म की कमी तो थी ही राजा भी आलसी और सुस्त था।

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. दरबार में गुणग्राहकता और कला की परख को किस प्रकार अनदेखा किया जाता है?

उत्तर- गुणवत्ता और कला के प्रयासों को दरबार में नजरअंदाज कर दिया गया है। इसीलिए हम कह सकते है की वहाँ कला को अनदेखा किया जाता है। वे कला का परख करना नहीं जानते हैं। यहाँ ये स्वीकार्य है की भोग के कारण राजा और दरबारी अंधे हो गए हैं। ऐसे माहौल में कला को कोई महत्व नहीं मिलता।

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. देव ने दरबारी चाटुकारिता और दंभपूर्ण वातावरण पर किस प्रकार व्यंग्य किया है?

उत्तर- देव दरबार के बारे में लेखक लिखता है की देव दरबार का वातावरण बहुत ही भयावह है ।वहाँ के राजा और दरबारी हमेशा भोग विलास विलिप्त रहते हैं। अपने दरबारियों के साथ-साथ राजा भी भोग विलास में अंधा है जो कुछ भी नहीं देख सकता है। वह अपने इस अहंकार में इतना व्यस्त

है कि कला और सुंदरता के प्रति ना तो उसका ध्यान जाता है और ना ही वह उनकी कद्र करता है ।

PAGE 135, अभ्यास

11:12:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. देव के अलंकार प्रयोग और भाषा प्रयोग के कुछ उदाहरण पठित पदों से लिखिए।

उत्तर- देव के अलंकार प्रयोग और भाषा प्रयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

(क) पहली रचना में 'वियोग से व्याकुल गोपी' की दशा को दर्शाने के लिए अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है ।

(ख) हरि शब्द की दो अलग रूपों में पुनः आवृति के कारण यहाँ पर यमक अलंकार है ।

(ग) झहरि- झहरि, घहरि- घहरि आदि में पुनरुक्ति अलंकार है ।

(घ) घहरि- घहरि घटा घेरी में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

11:12:2: योग्यता-विस्तार:8

8. 'दरबार' सवैये को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'अंधेर नगरी' के समकक्ष रखकर विवेचना कीजिए।

उत्तर- देव की रचना दरबार में और भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'अंधेर-नगरी' में अदालत प्रणाली का वर्णन कुछ-कुछ समान है। राजा और दरबार के अन्य सदस्य भोग-विलास में लिप्त होकर और अंधेर-नागरी के मूर्ख राजा की मूर्खता के कारण अकर्मण्य हो गए हैं, इस कारण लोग निष्क्रिय रहते हैं। दोनों कविताओं में दरबारी केवल चाटुकारिता में लगे हैं। राजा को खुश रखने को वो अपना कर्तव्य समझते हैं। उनके लिए प्रजा और

राज्य के प्रति कर्तव्य की भावना विद्यमान ही नहीं है ।उनका यह व्यवहार ही देश को गुलाम और पिछड़ा बनाया हुआ है ।